INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

LATEST EDITION

राजस्थान महिला ASI 2023

(सहायक उपनिरीक्षक)

HANDWRITTEN NOTES

PART-1 सामान्य हिंदी

INFUSION NOTES

WHEN ONLY THE BEST WILL DO

राजस्थान महिला ASI

(सहायक उपनिरीक्षक)

भाग – 1

सामान्य हिंदी

प्रस्तावना

*प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "**राजस्थान महिला ASI (सहायक उपनिरीक्षक)**" को एक विभिन्न अपने अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है / ये नोट्स पाठकों को **राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)** द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा **"राजस्थान महिला ASI (सहायक उपनिरीक्षक)" की** परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगें **/***

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती हैं / अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं/

प्रकाशकः

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो : 9887809083

ईमेल : contact@infusionnotes.com

वेबसाइट : http://www.infusionnotes.com

Whatsapp करें - https://wa.link/2iclos

Online order करें - https://bit.ly/asi-woman

मूल्य : ₹

संस्करण : नवीनतम

हिंदी

1. संधि एवं संधि विच्छेद	1-19
2. समास एवं समास- विग्रह	20-38
3. उपसर्ग	39-45
4. प्रत्यय	46-54
5. तद्भव एवं तत्सम, देशज एवं विदेशज	55 -64
6. संज्ञा	64-69
7. सर्वनाम	70-71
8. विशेषण	72-74
9. क्रिया	75-77
10. अव्यय(अविकारी शब्द)	78-83
11. पर्यायवाची शब्द	83-96
12. विलोम शब्द	97-113
13. शब्द युग्म भिन्नार्थक शब्द	114-126
14. वाक्यांश के लिए सार्थक शब्द	126-143
15. समश्रुत भिन्नार्थक शब्द	144-146
16. शब्द शुद्धि	146-152
17. व्याकरण कोटियाँ	152-165
• पक्ष • वृति	

• परसर्ग कारक / • लिंग • वचन • काल • वाच्य	
18.वाक्य रचना एवं वाक्यों के प्रकार तथा पदबंध	165-171
19. वाक्य-शुद्धि	171-179
20.विराम-चिह्न	179-182
21. मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ	183-198
22. पारिभाषिक : प्रशासनिक शब्दावली	198-214

हिंदी

अध्याय – 1

संधि एवं संधि विच्छेद

परिभाषा :- दो वर्णों के परस्पर मेल से उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहते है अर्थात् प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में जो परिवर्तन करते हैं। उसे संधि कहते हैं।

संधि – 1.आदेश :- किसी वर्ण के स्थान पर कोई दुसरा वर्ण आ जाये तो ,

जगत्+ईश = जगदीश

वाक्+ईश = वागीश

2. आगम – अनु+छेद = अनुच्छेद
च्

3. लोप – अतः+एव = अतएव

4. प्रकृतिभाव - मनः+कामना = मनःकामना

संयोग – प्रथम शब्द का अंतिम वर्ण और दुसरे शब्द का प्रथम वर्ण मिलकर उच्चारण और लेखन में कोई परिवर्तन नहीं कर पाए तो उसे संयोग कहते हैं।

उदाहरण : - युग + बोध = युगबोध

संधि के भेद – संधि के तीन भेद होते हैं

स्वर संधि व्यंजन संधि विसर्ग संधि

स्वर संधि – दो स्वरों के परस्पर मेल को संधि कहते हैं।

स्वर संधि पाँच प्रकार की होती है :-

1. दीर्घ स्वर संधि
2. गुण स्वर संधि
3. वृद्धि स्वर संधि
4. यण् स्वर संधि
5. अयादि स्वर संधि

हिंदी में अ, आ, इ, ई , उ , ऊ , ए , ऐ , ओ , औ , ऋ , कुल 11 स्वर होते हैं।

1. **दीर्घ स्वर संधि** - यदि ह्रस्व या दीर्घ स्वर (अ , इ , उ) के बाद समान
ह्रस्व (अ , इ , उ) या दीर्घ स्वर आये तो दोनों मिलकर दीर्घ हो जाते हैं।

उदा.

अ/आ +अ/आ = आ
इ/ई + इ/ई = ई
उ/ऊ + उ /ऊ = ऊ

(1).अ +अ =आ

अंत्य + अक्षरी = अंत्याक्षरी

अंध + अनुगामी = अंधानुगामी

अधिक + अंश = अधिकांश

अधिक + अधिक = अधिकाधिक

अस्त + अचल = अस्ताचल

आग्नेय + अस्त्र = आग्नेयास्त्र

उत्तर + अधिकार = उत्तराधिकार

उदय + अचल = उदयाचल

उप + अध्याय = उपाध्याय

उर्ध्व + अधर = उर्ध्वधर

ऊह + अपोह = ऊहापोह

काम + अयनी = कामायनी

गत + अनुगतिक = गतानुगतिक

गीत + अंजलि = गीतांजलि

छिद्र + अन्वेषी = छिद्रान्वेषी

जठर + अग्नि = जठराग्नि

INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

जन + अर्दन = जनार्दन

तथ्य + अन्वेषण= तथ्यान्वेष्ण

तीर्थ + अटन = तीर्थाटन

दाव + अनल = दावानल

दीप + अवली = दीपावली

दाव + अग्नि = दावाग्नि

देश + अंतर = देशांतर

न्यून + अधिक = न्यूनाधिक

पद + अवनत = पदावनत

पर + अधीन = पराधीन

प्र + अंगन = प्रांगण

प्र + अर्थी = प्रार्थी

भग्न + अवशेष = भग्नावशेष

अ + आ = आ

आम + आशय = आमाशय

गर्भ + आधान = गर्भाधान

अन्य + आश्रित = अन्याश्रित

गर्भ + आशय = गर्भाशय

आर्य + आवर्त = आर्यावर्त

फल + आहार = फलाहार

कंटक + आकीर्ण = कंटकाकीर्ण

छात्र +आवास = छात्रावास

कुश + आसन = कुशासन

जन + आकीर्ण = जनाकीर्ण

खग + आश्रय = खगाश्रय

जना +देश =जनादेश

गमन + आगमन = गमनागमन

भय + आक्रान्त = भयाक्रांत

भय + आनक = भयानक

पित्त + आशय = पित्ताशय

धर्म + आत्मा = धर्मात्मा

भ्रष्ट + आचार = भ्रष्टाचार

मेघ + आलय = मेघालय

लोक + आयुक्त = लोकायुक्त

विरह + आतुर = विरहातुर

विवाद + आस्पद = विवादास्पद

शत + आयु = शतायु

शाक + आहारी = शाकाहारी

शोक + आतुर = शोकातुर

सत्य + आग्रह = सत्याग्रह

सिंह + आसन = सिंहासन

स्थान + आपन्न = स्थानापन्न

हिम + आलय = हिमालय

जल + आशय = जलाशय

पंच + आयत = पंचायत

आ + अ = आ

क्रिया + अन्वयन = क्रियान्वयन

मुक्ता + अवली = मुक्तावली

तथा + अपि = तथापि

रचना + अवली = रचनावली

दीक्षा + अंत = दीक्षांत

विद्या + अर्जन = विद्यार्जन

द्राक्षा + अरिष्ट = द्राक्षारिष्ट

श्रद्धा + अंजलि = श्रद्धांजलि

INFUSION NOTES WHEN ONLY THE BEST WILL DO

द्राक्षा + अवलेह = द्रक्षावलेह

सुधा + अंशु = सुधांशु

निशा + अंत = निशांत

द्वारका + अधीश = द्वारकाधीश

पुरा + अवशेष = पुरावशेष

महा + अमात्य = महामात्य

आ + आ = आ

कारा + आगार = कारागार

कारा + आवास = कारावास

कृपा + आकांशी = कृपाकांशी

क्रिया + आत्मक = क्रियात्मक

चिंता + आतुर = चिंतातुर

दया + आनंद = दयानंद

द्राक्षा + आसव = द्राक्षासव

निशा + आनन = निशानन

प्रेक्षा + आगार = प्रेक्षागार

प्रेरणा +आस्पद = प्रेरणास्पद

भाषा + आबद्ध = भाषाबद्ध

महा + आशय = महाशय

रचना + आत्मक = रचनात्मक

वार्ता + आलाप = वार्तालाप

श्रद्धा + आलु = श्रद्धालु

(2). इ / ई + इ /ई = ई

इ + इ = ई

अति + इत = अतीत

अति + इन्द्रिय = अतीन्द्रिय

अति + इव = अतीव

अधि + इन = अधीन

अभि + इष्ट =अभीष्ट

कवि + इंद्र = कविन्द्र

प्रति + इत = प्रतीत

प्राप्ति + इच्छा = प्राप्तीच्छा

मणि + इंद्र = मणीन्द्र

मुनि + इंद्र = मुनीन्द्र

रवि + इंद्र = रवीन्द्र

हरि + इच्छा = हरीच्छा

ई + इ = ई

फणी + इंद्र = फणीन्द्र

महती + इच्छा = महतीच्छा

मही + इंद्र = महींद्र

यती + इंद्र = यतीन्द्र

शची + इंद्र = सुधींद्र

ई + ई =ई

नदी + ईश्वर = नदीश्वर

नारी + ईश्वर = नारीश्वर

फणी + ईश्वर = फणीश्वर

मही + ईश = महीश

रजनी + ईश = रजनीश

श्री + ईश = श्रीश

सती + ईश = सतीश

इ + ई = ई

अधि + ईक्षक = अधीक्षक

अधि + ईक्षण = अधीक्षण

अधि + ईश्वर = अधीश्वर

आ + उ = ओ

करुणा + उत्पादक = करुणोत्पादक

क्षुधा + उत्तेजन = क्षुधोत्तेजन

महा + उत्सव = महोत्सव

महा + उदय = महोदय

यथा + उचित = यथोचित

अ+ ऊ = ओ

अक्ष + ऊहिनी = अक्षौहिनी

नव + ऊढा = नवोढा

जल + ऊर्मि = जलोर्मि

आ + ऊ = ओ

गंगा + उर्मि = गंगोर्मि

महा + ऊर्जा = महोर्जा

अ /आ + ऋ = अर्

कण्व+ऋषि = कवर्षि ग्रीष्म+ ऋतु = ग्रीष्मर्तु

देव + ऋषि = देवर्षि ब्रह्म + ऋषि = ब्रह्मर्षि

राजन् + ऋषि = राजर्षि शीत + ऋतु = शीतर्तु

आ +ऋ = अर्

महा + ऋषि = महर्षि वर्षा + ऋतु = वर्षर्तु

3. वृद्धि स्वर संधि =

अ/आ + ए / ऐ = ऐ
अ /आ +ओ / औ = औ

नियम = (1) यदि अ / आ के बाद ए / ऐ आए तो दोनों के स्थान पर 'ऐ ' हो जाता है |

नियम = (2) यदि अ/ आ के बाद ओ / औ आए तो दोनों के स्थान पर 'औ ' हो जाता है |

अ / आ+ए / ऐ = ऐ

अ +ए = ऐ

एक + एक = एकैक

धन + एषणा = धनैषणा

धन + एषी = धनैषी

पुत्र + एषणा = पुत्रैषणा

प्रिय + एषी = प्रियैषी

लोक + एषणा = लोकैषणा

वित्त + एषणा = वित्तैषणा

शुभ +एषी = शुभैषी

हित + एषी = हितैषी

आ + ए = ऐ

तथा + एव = तथैव

वसुधा +एव = वसुधैव

सदा + एव = सदैव

अ +ऐ = ऐ

मत + ऐक्य = मतैक्य

विचार + एक्य = विचारैक्य

विश्व + ऐक्य = विश्वैक्य

स्व + ऐच्छिक = स्वैच्छिक

आ + ऐ = ऐ

महा + एश्वर्य = महैश्वर्य

अ / आ + ओ / औ = औ

अ + आ = औ

अधर + ओष्ठ = अधरोष्ठ

जल + ओक = जलौक

जल + ओध = जलौध

दंत + ओष्ठ्य = दंतोष्ठ्य

परम + ओजस्वी= परमौजस्वी

अ+ औ = औ

अक्ष +ऊहिनी = अक्षौहिनी

जल + औषध = जलौषधि

वन + औषधि = वनौषधि

परम + औषधि = परमौषधि

मंत्र + औषधि = मंत्रौषधि

आ +ओ = औ

महा + ओज = महौज

आ + औ= औ

महा + औषध = महौषध

महा + औषधि = महौषधि

यण् स्वर संधि : -

इ/ई + असमान स्वर =य्

उ /ऊ + असमान स्वर =व्

ऋ + असमान स्वर = र्

नियम : - यदि इ/ ई, उ /ऊ , ऋ के बाद असमान स्वर आए तो इ / ई के स्थान पर 'य्' उ / ऊ के स्थान पर ' व्' तथा ऋ के स्थान ' र्' हो जाता है|

इ + अ = य

अति + अंत = अत्यंत

अति + अधिक = अत्यधिक

अति + अल्प = अत्यल्प

अधि + अधीन = अध्यधीन

अधि + अयन = अध्ययन

अधि + अक्षर = अध्यक्षर

अधि + अक्ष = अध्यक्ष

अभि + अंतर = अभ्यंतर

अभि + अर्थना = अभ्यर्थना

अभि + अर्थी = अभ्यर्थी

आदि + अंत = आद्यंत

गति + अनुसार = गत्यनुसार

गति + अवरोध = गत्यवरोध

जाति + अभिमान = जत्यभिमान

त्रि + अंबक = त्र्यंबक

परि + अंक = पर्यंक

परि + अंत = पर्यंत

परि +अटन = पर्यटन

परि + अवसान = पर्यवसान

परि + अवेक्षक = पर्यवेक्षक

परि + अवेक्षण = पर्यवेक्षण

प्रति + अंतर = प्रत्यंतर

प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष

प्रति + अपकार = प्रत्यपकार

प्रति + अय = प्रत्यय

प्रति + अर्पण = प्रत्यर्पण

यदि + अपि = यद्‌अपि

रीती + अनुसार = रीत्यनुसार

वि + अंजन = व्यंजन

वि + अक्त = व्यक्त

वि + अग्र = व्यग्र

वि + अभिचार = व्यभिचार

वि + अय = व्यय

वि + अर्थ = व्यर्थ

दिक् + नाग = दिङ्नाग

दिक् + मंडल = दिङ्मंडल

वाक् + निपुण = वाङ्निपुण

दिक् + मुख = दिङ्मुख

दिक् + मूढ़ = दिङ्मूढ़

षट् + मास = षण्मास

षट् + मातुर = षण्मातुर

जगत् + नाथ = जगन्नाथ

जगत् + निवास = जगन्निवास

भवत् + निष्ठ = भवन्निष्ठ

श्रीमत् + नारायण = श्रीमन्नारायण

चित् + मय = चिन्मय

जगत् + माता = जगन्माता

जगत् + मोहिनी = जगन्मोहिनी

सत् + मार्ग = सन्मार्ग

सत् + मति = सन्मति

सत् + मान = सन्मान

उद् + नत = उन्नत

उद् + निद्र = उन्निद्र

उद् + मूलन = उन्मूलन

उद् + मोचन = उन्मोचन

तद् + मय = तन्मय

मृद् + मय = मृण्मय

मृद् + मूर्ति = मृण्मूर्ति

मृद् + मयी = मृण्मयी

नियम : - (3) यदि ' म्' के बाद स्पर्श वर्ण आए तो 'म्' को स्पर्श वर्ण के अंतिम वर्ण में बदल देते हैं यदि अन्तःस्थ , ऊष्म या संयुक्त वर्ण आए तो 'म्' को अनुस्वार में बदल देते हैं और यदि कोई स्वर आए तो दोनों को जोड़ देते है ।

उदाहरण –

अलम् + कृति = अलङ्कृति (अलंकृति)

अलम् + करण = अलङ्करण (अलंकरण)

अलम् + कृत = अलङ्कृत (अलंकृत)

अहम् + कार = अहङ्कार(अहंकार)

भयम् + कर = भयंकर

शम् + कर = शंकर

शुभम् + कर = शुभंकर

सम् + क्षेप = संक्षेप

सम् + तोष = संतोष

सम् + तुष्ट = संतुष्ट

सम् + ताप = संताप

सम् + तति = संतति

सम् + कलन = संकलन

सम् + कल्प = संकल्प

अम् + जन = अंजन

चिरम् + जीवी = चिरंजीवी

धनम् + जय = धनंजय

सम् + क्रांति = सक्रांति

सम् + घटन = संघटन

सम् +गठन = संगठन

सम् + गत = संगत

मम् + जन = मंजन

मृत्यु + जय = मृत्युन्जय

सम् + जय = संजय

सम् + गति = संगति

सम् + गम = संगम

सम् + घनन = संघनन

सम् + घर्ष = संघर्ष

परम् + तप = परंतप

किम् +नर = किन्नर

सम् +निवेश = सन्निवेश

सम् + न्यासी = संन्यासी

सम् + निहित =सन्निहित

सम् + निकट = सन्निकट

नियम : - यदि 'म्' के पश्चात 'क्' से 'म्' तक के स्पर्श व्यंजन के अलावा ऊष्म व्यंजन (श्, ष् , स् , ह्) अथवा अंतस्थ व्यंजन (य् , र् , ल् , व्) आए तो 'म्' (अनुस्वार) में बदल जाता हैं l

उदाहरण –

सम् + रचना = संरचना

सम् + लिप्त = संलिप्त

सम् + वरण = संवरण

सम् + वाहक = संवाहक

सम्म + श्लेष्ण = संश्लेषण

सम् + हति = संहति

सम् + हिता = संहिता

सम् + हार = संहार

सम् + रक्षक = संरक्षक

सम् + लग्न = संलग्न

सम् + लाप = संलाप

सम् + वर्धन = संवर्धन

सम् + वाद = संवाद

सम् + विधान = संविधान

सम् + शय = संशय

सम् + स्मरण = संस्मरण

स्वयम् + वर = स्वयंवर

नियम : - (5) यदि 'द्' के बाद क्, त्, थ् , प् , स् आये तो 'द्' वर्ण 'त्' वर्ण के रूप में बदल जाता है l

उदाहरण –

आपद् + काल = आपत्काल

उद् + कट = उत्कट

उद् + कीर्ण = उत्कीर्ण

उद् + कोच = उत्कोच

उद् + क्षिप्ति = उत्क्षिप्त

उपनिषद् + कथा = उपनिषत्कथा

तद् + काल = तत्काल

उद् + सव = उत्सव

तद् + क्षण = तत्क्षण

विपद् + काल = विपत्काल

शरद् + काल = शरत्काल

उद् +तर = उत्तर

उद् + ताप = उत्ताप

उद् + तीर्ण = उत्तीर्ण

उद् + तेजक = उत्तेजक

संसद् + सत्र = संसत्सत्र

मृद् + टिका = मृत्तिका

विपद् + ति = विपत्ति

संपद् + ति = संपत्ति

उद् + पन्न = उत्पन्न

तद् + पर = तत्पर

तद् + परायण = तत्परायण

तद् + पुरुष = तत्पुरुष

उद् + सर्ग = उत्सर्ग

मृद् + पात्र = मृत्पात्र

नियम : - (6) यदि 'त्' / 'द्' के बाद च , छ ,ज , ल , ह , श आये वह अपने ही उच्चारण में बदल जाते हैं |

यदि त्त् / द् +
- च → च्च
- छ → च्छ
- ज → ज्ज
- ट → ट्ट
- ल → ल्ल
- ह → द्ध
- ड → ड्ड

में बदल जाते हैं|

उदा. – त्त् / द् + च = च्च

उद् + चातन = उच्चातन

उद् + चारण = उच्चारण

तडित् + चालक = तडिच्चालक

विद्युत् + चालक = विद्युच्चालक

सत् + चरित्र = सच्चरित्र

सत् + चिदानंद = सच्चिदानंद

समुद् + चय = समुच्चय

त् / द् + छ = च्छ

उद् + छिन्न = उच्छिन्न

उद् + छादन = उच्छादन

उद् + छेद = उच्छेद

जगत् + छाया = जगच्छाया

अनु + छेद = अनुच्छेद

त् / द् + ज = ज्ज

उद् + ज्वल = उज्जवल

जगत् + जननी = जगज्जननी

तडित् + ज्योति = तड़िज्ज्योति

तद् + जनित = तज्जनित

तद् + जन्य = तज्जन्य

यावत् + जीवन = यावज्जीवन

विद्युत् + जाल = विद्युज्जाल

सत् + जन = सज्जन

त् / द् + ट = ट्ट

उपनिषद् + टीका = उपनिषट्टीका

बृहत् + टीका = बृहट्टीका

त् / द् + ह = द्ध

उद् + हार = उद्धार

उद् + हृत = उद्धृत

उद् + हरण = उद्धरण

पद् + हति = पद्धति

त् / ड + ड्ड

उद् + डयन = उड्डयन

त् / द् + ल = ल्ल

उद् + लास = उल्लास

उद् + लंघन = उल्लंघन

उद् + लिखित = उल्लिखित

उद् + लेख = उल्लेख

अध्याय – 3

उपसर्ग

- **संस्कृत उपसर्ग** : - संस्कृत व्याकरण में 22 उपसर्ग होते हैं |

1. **अति :- (** अधिक , परे)

बिना संधि – अतिक्रमण , अतिशय , अतिसार , अतिमानव , अतिव्याप्ति |

दीर्घ संधि के उदा. – अतीन्द्रिय ,अतीत , अतीव (अति + इव)

यण् संधि के उदा.- अत्यंत (अति +अंत), अत्यल्प (अति+अल्प), अत्युक्ति (अति +उक्ति)|

प्रत्यय से सम्बन्धित- अतिशयिक , आतिरेक्य (अति + रेक + य – प्रत्यय) आत्यंतिक |

2. **अधि :- (ऊपर , अधिक)**

बिना संधि – अधिकरण , अधिगम, अधित्यका , अधिनायक , अधिनियम (अधि + नि +यम), अधिपति , अधिमास , अधिराज , अधिशासी , अधिसूचना |

दीर्घ संधि – अधीक्षण (अधि +ईक्षण), अधीन (अधि+इन) , अधीश (अधि +ईश)|

यण् संधि – अध्ययन (अधि+अयन), अध्यापक , अध्याय |

व्यंजन संधि – अधिष्ठाता (अधि+स्थाता), अधिष्ठान (अधि +स्थान)

प्रत्यय से सम्बंधित – आधिकारिक (अधिकार+इक), आधिपत्य , आध्यात्मिक (अध्यात्म +इक)|

3. **अभि :- (सामने , पास)**

बिना संधि – अभिज्ञ, अभिज्ञान , अभिनय , अभिन्यास , अभिप्राय , अभिभाषण , अभिभूत , अभिमन्यु , अभिमुख , अभियान , अभिराम , अभिलाषा , अभिवादन , अभिशंसा , अभिशाप , अभिसार |

दीर्घ संधि – अभीप्सित (अभि +ईप्सित), अभीष्ट (अभि +इष्ट) |

यण् संधि – अभ्यंतर (अभि +अंतर), अभ्यर्थी (अभि +अर्थी), अभ्यागत , अभ्यास , अभ्युत्थान (अभि+उद्+स्थान), अभ्युदय(अभि +उद्+अय)|

व्यंजन संधि – अभिषेक (अभी+सेक)

प्रत्यय सम्बंधित – आभिजन (अभिजन+अ), अभिजात्य(अभिजात +य), आभ्यंतरिक |

4. **नि :- (बड़ा , विशेष , निषेधात्मक)**

बिना संधि – निकर , निकाय , निकृष्ट , निगम, निदान , निधन , निधि (नि+धि) , निपट , निपात, निगुण , निबंध , नियंत्रण , नियम ,निरत , निरूपण, निरोध |

यण् संधि – न्यस्त (नि+अस्त), न्याय (नि + आय), न्यास (नि + आस), न्यून (नि + ऊन)|

व्यंजन संधि – निषेध (नि+सेध), निष्ठा (नि+स्था)

प्रत्यय सम्बंधित -नैकट्य(नि+कट +य), नैदानिक (नि+दान+इक)

5. **प्रति :- (विपरित, प्रत्येक , ओर)**

बिना संधि – प्रतिकूल , प्रतिक्रिया , प्रतिक्षण , प्रतिघात , प्रतिज्ञा , प्रतिदिन , प्रतिनिधि , प्रतिनियुक्ति , प्रतिबन्ध , प्रतिभा , प्रतिमा , प्रतिरूप, प्रतिवाद , प्रतिवादी , प्रतिशत , प्रतिस्पर्धा , प्रतिहिंसा |

दीर्घ संधि – प्रतीक (प्रति+इक),प्रतिक्षा (प्रति+ईक्षा)

यण संधि – प्रत्यक्ष (प्रति+अक्ष), प्रत्यपकार (प्रति+उप +कार), प्रत्यर्पण , प्रत्याघात , प्रत्यालोचना , प्रत्यावर्तन (प्रति + आ + वर्तन), प्रत्याशी , प्रत्युत्तर (प्रति + उद् + तर) , प्रत्युत्पन्न, प्रत्युपकार, प्रत्येक।

व्यंजन संधि- प्रतिषेध (प्रति+सेध -रोक), प्रतिष्ठा (प्रति + स्था), प्रतिष्ठा (प्रति + स्था), प्रतिष्ठित (प्रति + स्थित)।

प्रत्यय सम्बंधित – प्रातिनिधिक, प्रातिपदिक (प्रतिपद + इक)

6. **परि :-(चारों ओर , पास)**

बिना संधि – परिकल्पना , परिक्रमा , परिग्रह , परिचारिका , परिजन , परिज्ञान , परितोष , परिधान , परिधि , परिपूर्ण , परिवर्तन , परिमार्जन, परिवार , परिवेश , परिशिष्ट ।

दीर्घ संधि – परीक्षण(परि+ईक्षण), परीक्षा (परि +ईक्षा)

यण् संधि – पर्यंक (परि + अंक), पर्यटन(परि + अटन), पर्यवसान (परि + अव + सान), पर्यवेक्षण (परि + अव + ईक्षण), पर्याप्त (परि + आप्त), पर्यावरण (परि + आ + वरण), पर्युषण (परि + उषण)।

व्यंजन संधि – परिणय (परि + नय), परिमाण (परि+मान), परिष्कार (परि + कार), परिष्कृत (परि + कृत)।

7. **वि :- (विशेष , भिन्न , अभाव)**

बिना संधि – विधान , विनय , विनीत , विकट , विकराल , विकल , विकार , विकास , विकिरण , विकीर्ण , विकृत , विक्रम , विख्यात , विग्रह , विघटन , विचलित , वितान , वितृष्णा, विद्रोह , विधवा , विधान , विपुल , विप्लव , विभ्रम , विरस, विराम , विरुद्ध , विरेचन , विलम्ब , विलोम , विवेक , विशेष , विश्लेषण , विहार , ।

दीर्घ संधि – व्यंजन (वि+अंजन), व्यग्र (वि +अग्र), व्यक्ति (वि+अक्ति), व्यतिरेक (वि + अति + रेक), व्यभिचार (वि+अभि+चार), व्यय (वि+अय)

व्यवसाय (वि+अव+साय), व्यष्टि (वि+अष्टि), व्यसन (वि+असन), व्यस्त (वि+अस्त), व्याकरण, व्याकुल (वि+आ+कुल), व्याधि (वि+असन), व्यस्त (वि+अस्त), व्याकरण, व्याकुल (वि + आ + कुल), व्याधि (वि + आधी), व्यापार (वि + आ + पार)।

8. **अनु :- (पीछे, समान)**

बिना संधि – अनुकरण , अनुकूल , अनुक्रम , अनुगामी , अनुग्रहीत , अनुचर ,अनुज (अनु+ज), अनुज्ञप्ति , अनुज्ञा (अनुमति), अनुताप , अनुदान, अनुपूरक , अनुबंध , अनुप्रास, (अनु+प्र+आस) , अनुबंध , अनुभव , अनुमान , अनुयायी , अनुराग, अनुरूप , अनुवाद , अनुशंसा , अनुशासन , अनुसार ,।

दीर्घ संधि – अनूदित (अनु +उद्+इत)

यण् संधि – अन्वय (अनु+अय), अन्वीक्षण (अनु+ईक्षण), अन्वीक्षा (अनु+ईक्षा), अन्वेषक (अनु+एषक), अन्वेषण (अनु+एषण)।

व्यंजन संधि – अनुच्छेद (अनु+छेद), अनुष्ठान (अनु+स्थान)

प्रत्यय से सम्बन्धित –आनुपातिक (अनुपात +इक) , अनुवंशिक, अनुषांगिक (अनु+संग+इक), आन्वयिक (अनु+अय+इक)।

9. **सु :- (अच्छा , सरल)**

बिना संधि – सुअवसर (सु+अव+सर), सुकर्म , सुगंध , सुगति , सुचरित्र , सुजन , सुदिन , सुदूर, सुदृढ़ , सुनिश्चय (सु+निस्+चय),सुपरिचित , सुपाच्य , सुपुत्र , सुमन , सुमार्ग , सुरति , सुलभ, सुविधा , सुव्यवस्थित , सुशील ।

निस्तारण , निस्तेज (निस्+तेज), निस्संकोच (निस्+सम्+कोच), निस्संदेह (निस्+सम्+देह), निस्सार , निस्सीम , निस्स्वार्थ ।

निः - निःसार , निःसीम , निःस्वार्थ ।

निश् – (निस्+ अघोष तालव्य व्यंजन (च , छ, श)।

निश्चय (निस्+चय), निश्चल , निश्चिंत , निश्चित, निश्छल , निश्शुल्क (निस्+शुल्क), निश्श्वास (निस्+श्वास) ।

निष् :- (निस्+क,प,फ)

निष्कंटक (निस्+कंटक), निष्काम (निस्+काम), निष्कासन (निस्+कासन), निष्फल (निस्+फल), निष्पक्ष (निस्+पक्ष), निष्पत्ति (निस्+पत्ति) , निष्प्रभ (निस्+प्र +भा = चमक)।

प्रत्यय संबंधित : - नैयामिक (नि+ आय+इक), नैष्क्रमण (निस्+क्रमण +अ) ।

20. उद् – (ऊपर , श्रेष्ट)

बिना संधि – उद्घाटन (उद्+घाटन), उद्घोष(उद्+घोष), उद्घोषणा (उद्+घोषणा),उद्दंड (उद्+दंड), उद्देश्य (उद्+देश्य), उद्धत(उद्+हत), उद्धरण (उद्+हरण), उद्धृत (उद्+हृत उद्बोधन (उद्+बोधन), उद्भव (उद्+भव), उद्भेदन , उद्यम (उद्+यम)।

उत् (उद्+अघोष व्यंजन)- उत्कंठा (उद्+कंठा), उत्कर्ष (उद्+कर्ष), उत्कृष्ट (उद्+कृष्ट) , उत्खनन (उद्+खनन), उत्तम (उद्+तम) , उद्गार (उद्+गार), उत्ताप (उद् +ताप) , उत्तीर्ण (उद्+तीर्ण), उत्तुंग , उत्तेजित , उत्सर्ग , उत्सव , उत्साह ।

उच् (उच्+च , छ , श तालव्य व्यंजन)

उच्छलन (उद्+शलन), उच्छिष्ट (उद्+शिष्ट), उच्छृंखल (उद्+श्रृंखल), उच्छेद (उद्+छेद) , उच्छ्वास (उद्+श्वास), उच्चय (उद्+चय), उच्चारण (उद् + चारण)।

21. सम् :- (अच्छी तरह , शुद्ध , पूर्ण , साथ)

बिना संधि – सम्मान , सम्मुख , सम्मोह ।

सम् (सम्+स्वर)- समग्र (सम +अग्र), समधिक (सम्+अधिक), समन्वय (सम् + अनु + अय), समर्थ (सम् + अर्थ), समर्पण (सम् + अर्पण), समागम, समाचार, समाज, समादर, समाधान, सामान, समापन , समायोजन, समारंभ, समारोह, समाविष्ट (सम् + आ +विष्ट), समास, समीक्षा, अमुच्चय, समूह ।

सम्+व्यंजन ' न ' को छोड़कर –

संकर (सम्+कर), संकीर्ण (सम्+कीर्ण), संक्षेप, संक्षेपण, संग्रह, संगी, संगम, संघटन, संचय, संचार, संचालन, संजय, संचार, संचालन, संजय, संज्ञा, संतान, संदग्ध, संदिग्ध, सन्देश, संधान, संपत्ति, संपदा , संपर्क, सम्पुट, सम्पूर्ण, सम्प्रेषण, संसाधन , संसार

सन् (सम्+न) – संन्यास (सम् + नि + आस), सन्निवेश (सम् + नि + वेश)

प्रत्यय संबंधित – संविधानिक (सम् + वि + धान + इक), सांसारिक (सम् + सार + इक), सांस्कारिक (सम् + कार + इक), सांस्कृतिक (सम् + कृति + इक), सामाजिक, सामुदायिक (सम्+उद्+आय +इक), सामूहिक (सम् + ऊह + इक)।

22. पराः - (विपरित , पीछे , अधिक)

बिना संधि – पराकाष्ठा , पराक्रम , पराजय (परा +जय), पराभव , परामर्श , परावर्तन (वापसी) , पराविद्या

हिंदी उपसर्ग –

1. **अ – अकाज** , अचेत , अछूता , अजान , अटल , अथाह , अपच , अबेर , अलग ।
2. **अध (आधा)** – अधकचरा, अधखिला , अधगला, अधजला , अधनंगा , अधपका , अधमरा ।
3. **उ (ऊँचा)** - उखाड़ना उचक्का (उ + चक्का), उछलना, उजड़ना, उतारना, उतावला ।
4. **उन (एक कम) – उनचास** (उन+पचास), उनतालीस (उन + चालीस), उनतीस (उन + तीस), उन्नीस (उन + बीस)।
5. **औं (बुरा)** - औंगुण ,औंघट , औंघड़ , औंतार , औंसर ।
6. **चौ (चार)** - चौपड , चौपाया , चौमासा , चौमुखा, चौरंगी , चौराहा
7. **क , कु (बुरा , कठिन)** – कपूत, कुटेव, कुठौर, कुढंग ।
8. **दु (दो)** – दुगुना , दुधारू , दुनाली , दुभात , दुभाषिया , दुमट , दुरंगा , दुलत्ती।
9. **ति (तीन) – तिकोना** , तिगुना , तिपाई , तिमाही, तिरंगा , तिराहा ।
10. **दु** - संस्कृत के दुर् (दुस् का तद्भव रूप) (कम ख़राब)। दुकाल , दुबला ।
11. **नि** - निकम्मा , निठल्ला , निडर , निधड़क , निपट , निपूत , निहत्था ।
12. **पर (दूसरा) – परकाज** , परदादी , परदुख , परपोता , परसुख , परहित ।
13. **बिन (बिना निषेध या अभाव)** – बिनखाया , बिनजाने , बिनजाया , बिनदेखा, बिनाबुलाया , बिनबोया , बिनब्याहा , बिनमाने , बिनसोचा ।
14. **भर (पूरा या भरा हुआ)** – भरकम , भरपाई , भरपुर , भरपेट , भरमार , भरसक ।
15. **स (सहित)** – सचेत , सजग , सबेरा , सहित , सहेली ।
16. **स , सु (अच्छा)** – सपूत , सुघड़ , सुजान , सुडौल ।

विदेशी उपसर्ग -

अरबी – फारसी भाषाओं के उपसर्ग :-

1. **अल (निश्चित)** - अलकायदा , अलबत्ता , अलबेला , अलमस्त , अलविदा , अलहदा ।
2. **ऐन (ठीक)** – ऐनआदमी , ऐनाइनायत (सच्ची कृपा) , ऐनमौका , ऐवक्त ।
3. **कम (न्यून)** – कम -अक्ल , कमउम्र , कमज़ोर , कमबख्त , कमसिन (कमउम्र , अल्हड)।
4. **खुश (अच्छा)** – खुशकिस्मत , खुशखबरी , खुशदिल , खुशनुमा , खुशबू , खुशहाल , खुशमिजाज ।
5. **ग़ैर (रहित , भिन्न)** – ग़ैर-क़ानूनी , ग़ैर–कौम , ग़ैर – जवाबी , ग़ैर – जिम्मेदार , ग़ैर – मुमकिन, ग़ैर – हाजिर ।
6. **दर (में)** – दरअसल , अरकार , दरकिनार , दरख्वास्त , दरबार , दरमियान , दरवेश ।
7. **ना(बिना)** – नाइंसाफी , नाकाम , नाकारा , नाखुश , नाचीज , नादान , नापसंद , नापाक , नाबालिक , नामुमकिन , नामुराद , नालायक ।
8. **फ़ी (प्रत्येक)** – फ़ी आदमी , फ़ी मैंदान ।
9. **ब (साथ) (लिए , पर)** – बकौल , बखूबी , बजाय , बतौर , बदस्त , बदस्तूर , बदौलत , बमुश्किल , बशर्ते , बहैसियत (नाते)।
10. **बद (बुरा , पर)** – बदकिस्मत , बदचलन , बदजबान , बदजात , बदतमीज , बदनसीब , बदफैली ।
11. **बर (ऊपर , पर , बाहर)** – बरकरार , बरखास्त, बरदाश्त , बरबाद , बरवक्त ।
12. **बा (अनुसार , साथ में)** – बाअदब , बाइज्जत, बाकायदा , बामुलाहजा (लिहाज के साथ)।
13. **बिला (बिना)** – बिलाकनून , बिलावजह , बिलाशक , बिलाशर्त ।

अध्याय – 10

अव्यय

❖ अव्यय (अविकारी शब्द)

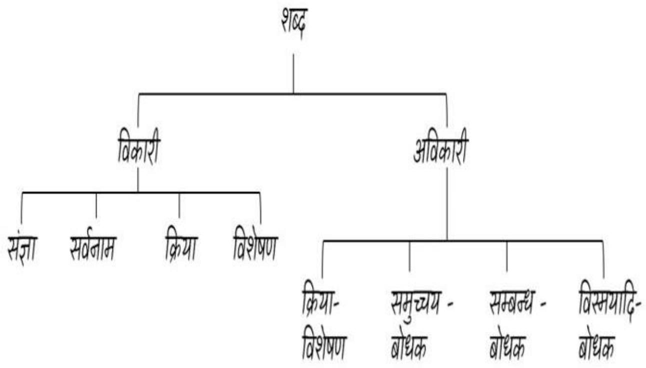

अविकारी या अव्यय शब्द

परिभाषा- "न व्ययेति इति अव्ययम्" के अनुसार अविकारी या अव्यय उन शब्दों को कहते हैं जिन शब्दों का रूप (लिंग, वचन, क्रिया, विभक्ति में) परिवर्तन नहीं होता अर्थात इन शब्दों पर काल, वचन, लिंग, पुरुष आदि का कोई प्रभाव नहीं पड़ता। ये शब्द जहाँ भी प्रयुक्त होते हैं, वहाँ एक ही रूप में रहते हैं। ये शब्द अव्ययीभाव समास के उदाहरण कहलाते हैं। जैसे- अन्दर बाहर, अनुसार, अधीन, इसलिए, यद्यपि, तथापि, परन्तु आदि। इनके अतिरिक्त अनेक उदाहरण हैं, दिए गए शब्दों का रूप परिवर्तन नहीं किया जा सकता जैसे अन्दर का अन्दरी, अन्दरे, अन्दरा रूप नहीं बन सकता। अतः अव्यय या अवकिारी शब्द हैं। अविकारी शब्दों को सुविधा, स्वरूप और व्यवस्था की दृष्टि से चार भागों में बाँटा गया है।

1. क्रिया-विशेषण

जो शब्द क्रिया के अर्थ में विशेषता प्रकट करते हैं, वे क्रिया विशेषण अविकारी शब्द कहलाते हैं।

जैसे- 1. वह प्रतिदिन पढ़ता है

2. कुछ खा लो।

3. मोहन सुन्दर लिखता है।

4. घोड़ा तेज दौड़ता है।

इन उदाहरणों में प्रतिदिन कुछ सुन्दर, तेज शब्द क्रिया की विशेषता प्रकट कर रहें हैं। अतः में शब्द क्रियाविशेषण हैं। क्रिया-विशेषण के चार मुख्य भेद हैं-

(i) कालवाचक (ii) स्थानवाचक

(iii) परिमाणवाचक (iv) रीतिवाचक

कालवाचक- जो क्रिया-विशेषण शब्द क्रिया के होने का समय सूचित करते हैं, उसे कालवाचक क्रिया-विशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. सीता कल आएगी।

2. तुम अब जा सकते हो।

3. दिन भर पानी बरसता रहा।

4. तुम प्रतिदिन समय पर आते हो।

वाक्यों में कल, अब, दिनभर, दिन-प्रतिदिन शब्द क्रिया की विशेषता बतला रहे हैं अतः काल वाचक क्रिया-विशेषण हैं।

स्थानवाचक क्रिया-विशेषण- जो शब्द क्रिया के स्थान या दिशा का ज्ञान कराएँ उन्हें स्थानवाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे- 1. वह पेड़ के नीचे बैठा है।

2. तुम आगे चलो।

3. हमारे आस-पास रहना।

4. इधर-उधर मत भागो।

इन वाक्यों में आगे, आस-पास, नीचे, इधर-उधर, स्थानवाचक क्रिया विशेषण शब्द है।

परिमाण वाचक- जिन क्रिया-विशेषण शब्दों से क्रिया की अधिकता-न्यूनता आदि परिमाण का पता लगे अर्थात नाप-तोल बतलाते हैं, वे परिमाण वाचक क्रियाविशेषण शब्द कहलाते हैं।

जैसे- 1. उतना खाओं, जितना आवश्यक हो।

2. कुछ तेज चलो।

3. रमेश बहुत बोलता है।

4. तुम खूब खेलो।

आदि उदाहरणों में उतना, जितना, कुछ, बहुत, खूब आदि परिमाण वाचक क्रिया-विशेषण अव्यय है।

रीतिवाचक- जिन क्रिया विशेषण शब्दों से क्रिया की रीति या विधि का पता चले उन शब्दों को रीतिवाचक क्रिया-विशेषण कहते है-रीतिवाचक विशेषण निम्न अर्थों में आते हैं-

प्रकारात्मक- धीरे-धीरे अचानक, अनायास, संयोग से, एकाएक, सहसा, सुखपूर्वक शान्ति से, हँसता हुआ, मन से, धड़ाधड़ झटपट, आप ही आप, शीघ्रता से, ध्यानपूर्वक, जल्दी, तुरन्त आदि।

निश्चयात्मक- अवश्य, ठीक, सचमुच, अलबत्ता, वास्तव में, बेशक, निःसंदेह आदि।

अनिश्चयात्मक- कदाचित्, शायद, सम्भव है, बहुत करके, प्राय; अक्सर आदि।

स्वीकारात्मक- हाँ, ठीक, सच, बिलकुल, सही, बिलकुल सही, जी हाँ, आदि।

कारणात्मक (हेतु)- इसलिए, अतएव, क्यों किसलिए, काहे को, अतः आदि कारणात्मक या हेतु क्रिया-विशेषण हैं।

निषेधात्मक- न, ना, नहीं, मत, बिलकुल नहीं, हरगिज नहीं, जी नहीं आदि।

आवृत्यात्मक- गटागट, फटाफट, खुल्लमखुल्ला आदि।

अवधारक - ही, तो, भी, तक, भर, मात्र, अभी, कभी, जभी, तभी, आदि।

क्रिया विशेषणों की रचना

मूल क्रिया विशेषणों के अतिरिक्त प्रत्यय, समास आदि के योग से भी कुछ क्रिया-विशेषण शब्दों की रचना होती है। जिन्हें यौगिक क्रिया-विशेषण कहा जाता है। ये निम्न प्रकार हैं-

संज्ञा से- प्रेमपूर्वक, कुशलतापूर्वक, दिन-भर, रात तक, सवेरे, सायं, आदि संज्ञा शब्दों के योग से बने हैं।

सर्वनाम से- यहाँ, वहाँ, अब, जब, जिससे, इसलिए, जिस पर, ज्यों, त्यों, जैसे-वैसे, जहाँ-वहाँ आदि।

विशेषण से- धीरे, चुपके, इतने में, ऐसे, वैसे, कैसे, जैसे, पहले, दूसरे प्रायः बहुधा आदि।

क्रिया से- चलते-चलते, उठते-बैठते, खाते-पीते, सोते-जागते, करते हुए, लौटते हुए, जाते-जाते आदि।

शब्दों की पुनरुक्ति से- हाथों-हाथ, बीचों-बीच, घर-घर, साफ-साफ, कभी-कभी, क्षण-क्षण, पल-पल, धड़ाधड़ आदि।

विलोमशब्दों के योग से रात-दिन, साँझ-सवेरे, देश-विदेश, उल्टा-सीधा, छोटा-बडा, आदि।

तः प्रत्याना- सामान्यतः; वस्तुतः; साधारणतः; येन केन, प्रकारेण (जैसे-तैसे) आदि।

बिना प्रत्ययान्त के- कभी-कभी, संज्ञा, सर्वनाम विशेषण आदि के बिना किसी प्रत्यय के, क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं- जैसे-

संज्ञा (1) तू सिर पड़ेगा।
(2) तुम खाक करोगे।

सर्वनाम (1) यह क्या हुआ।
(2)तूने यह क्या किया।

विशेषण (1) अच्छा हुआ।
(2) घोड़ा अच्छा चलता है।

<u>पूर्व कालिक क्रिया-</u> सुनकर चला गया। आदि वाक्य । क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं।

परसर्ग जोड़कर- कुछ क्रिया-विशेषणों के साथ को से, के, की, पर आदि विभक्तियाँ भी लगती हैं और इनके योग से भी क्रिया-विशेषणों की रचना होती है।

जैसे- 1. कहाँ से आ रहे हो?
2. यहाँ से क्यों जा रहे हो?
3. कब से तुम्हारी राह देख रहा हूँ।
4. गुरु जी से नम्रता से बोले।
5. आगे से ऐसा मत करना।
6. रात को देर तक मत पढ़ना।

आदि परसर्गों की सहायता से बने हुए वाक्य क्रिया-विशेषण का कार्य कर रहे हैं।

पदबन्ध- पूरे वाक्यांश क्रिया-विशेषण के रूप में प्रयुक्त होते हैं।

जैसे- 1. सवेरे से शाम तक।
2. धन-मन-धन से।
3. जी-जान से।
4. पहाड़ की तलहटी में।
5. आपके आदेशानुसार। आदि पदबन्ध क्रिया-विशेषण हैं।

2. **समुच्चय बोधक (योजक)**

परिभाषा- जो अव्यय दो शब्दों, वाक्यांशों, पदबन्धों या वाक्यों को मिलाते हैं वे समुच्चय बोधक या योजक अव्यय कहलाते हैं।

जैसे-

1.वह निकम्मा है इसीलिए सब उसे दुत्कारत हैं

2. यदि तुम परिश्रम करोगे तो अवश्य उत्तीर्ण होंगे ।

3. राम यहाँ रहे या कहीं और।

4. यह मेरा घर है और यह मेरे मित्र का।

उक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द समुच्चय या योजक अव्यय हैं क्यों कि ये वाक्यों को आपस में जोड़ रहे हैं।

समुच्चय बोधक अव्यय के दो भेद हैं-

1. समानाधिकरण समुच्चयबोधक

2. व्याधिकरण समुच्चय बोधक

1. समानाधिकरण समुच्चय बोधक

वे अव्यय जो समान घटकों (शब्दों, वाक्यों, या वाक्यांशों) को परस्पर मिलाते हैं, समानाधिकरण समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं।

समानाधिकरण अव्यय के चार भेद हैं-

(i) संयोजक
(ii) विकल्प बोधक
(iii) भेदबोधक

संयोजक- जो वाक्य शब्द वाक्यों, वाक्यांशों या शब्दों में संयोग प्रकट करते हैं उन्हें संयोजक कहते हैं यथा-

1. राम और श्याम दोनों एक ही कक्षा में पढ़ते हैं।

2. मैं और मेरा पुत्र एवं पड़ोसी सभी साथ थे।

3. बादल उमड़े एवं वर्षा हुई।

रेखांकित शब्द यहाँ संयोजक अव्यय हैं।

विकल्प बोधक- ये अव्यय शब्दों, वाक्यांशों, अथवा वाक्यों में विकल्प प्रकट करते हुए अथवा विभाजन करते हुए उनमें मेल कराते हैं- जैसे-

1. तुम चलोगे अथवा श्याम चलेगा।

2. न रमेश कोई काम करता है न सुरेश ही।

3. तुम्हें जन्मदिन पर घड़ी मिलेगी या साइकिल।

उक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द विकल्प बोधक अव्यय का कार्य कर रहे हैं।

भेद बोधक- ये योजक शब्द एक वाक्य, वाक्यांश या शब्द से भिन्नता का ज्ञान कराते हैं उन्हें भेद बोधक कहते हैं- जैसे- परन्तु, यद्यपि, तथापि, चाहे, तो भी।

1. वह नालायक है फिर भी पास हो जाता है।

2. यद्यपि तुम बुद्धिमान हो तथापि कम अंक लाते हो।

3. तुम पढ़ने में होशियार हो परन्तु रोज नहीं आते।

उक्त वाक्यों में रेखांकित शब्द वाक्यों में भिन्नता का ज्ञान करा रहे हैं।

भेदबोधक के प्रकार-

1. विरोधदर्शक

2. परिणामदर्शक

3. संकेतबोधक

4. स्वरूपबोधक

विरोधदर्शक- जब संयोजक द्वारा पहले वाक्य से मनचाहे अर्थ का विरोध प्रकट हो, तब वह विरोधदर्शक कहलाता है- इसके पहले अल्पविराम(,) अभावरान (;) और किन्तु, परन्तु।

जैसे- 1. रमेश ने बहुत प्रयत्न किया; परन्तु फिर भी असफल रहा।

2. छात्राएँ आगे बढ़ती गईं; किन्तु छात्र पिछड़ते रहे।

अतः उक्त वाक्यों में मनचाहा अर्थ नहीं मिल पाया क्यों कि प्रयत्न करना सफलता का प्रतीक है; पर असफलता मिली। छात्राओं की तरह छात्र भी आगे बढ़ते पर ऐसा अर्थ नहीं मिला। इसलिए यहाँ विरोधदर्शक अव्यय ही क्रियाशील रहे।

परिणामदर्शक- इसके द्वारा मिला हुआ वाक्य किसी परिणाम की ओर संकेत करता है।

जैसे-

1. चुप हो जाओ नहीं तो दण्ड मिलेगा।

2. नौकर ने चोरी की थी इसलिए उसे निकाल दिया।

3. मेरे घर के सामने मन्दिर है।

4. छत के ऊपर मोर नाच रहा है।

5. मेरे कारण तुम्हें परेशानी हुई।

शब्द	प्रयोग
नाई	पढ़े-लिखे की नाईं (तरह)
रहे	दो घड़ी दिन रहे तुम चल देना।
नीचे	पेड़ के नीचे खाट पर सो जाना।
तले	गरीब आकाश तले रात गुजारते हैं।
पास	गाँव के पास स्टेशन है।
निकट	शहर के निकट के लोग प्रायः सम्पन्न होते हैं।
समीप	तालाब के समीप मत जाना।
तक	हम दो दिन तक खाक छानते रहे।
प्रतिकूल	प्रकृति प्रतिकूल चले तो विनाश हो जाएगा।
विषय	मुझे महेश के विषय में कुछ नहीं कहना।
परे	शक्ति से परे व्यक्ति को कुछ नहीं करना चाहिए।
मध्य	आतंकवाद को लेकर भारत और पाकिस्तान के मध्य मन मुटाव चल रहा है।
समेत	भाइयों के समेत मैं भी वहीं था। आदि सम्बन्धबोधक अव्ययों के भण्डार को हम भाषा की सुविधा हेतु
निमित्त	हम सब तो निमित्त मात्र हैं।
आगे	मेरे घर के आगे बस-स्टेण्ड है।
पीछे	हमारे घर के पीछे नाला बहता है।
पहले	वर्षा से पहले छत ठीक कर लो।
द्वारा	मेरे द्वारा कुछ गलत न हो जाए।
समान	ज्ञान के समान और कोई पवित्र वस्तु नहीं है।
तुल्य	वह मानव नहीं, देव-तुल्य है।
सदृश	वह खुशी के मारे कमल के सदृश खिल उठा।
विरुद्ध	मेरे विरुद्ध वह आवाज नहीं उठा सकता।
बाहर	घर के बाहर बहुत बड़ा चौक है।

(चौदह) भेदों (प्रकार) में इस प्रकार स्पष्ट करेंगे।

1. कालवाचक- आगे, पूर्व, पहले, बाद, पीछे, पश्चात्, उपरान्त आदि।
2. स्थानवाचक- ऊपर, नीचे तले, मध्य, बाहर ही, भीतर, अन्दर, सामने, पास, निकट, यहाँ वहाँ, नजदीक आदि।
3. दिशावाचक- सामने, ओर, पार, तरफ, आर-पार, प्रति, आस-पास आदि।
4. साधन वाचक- विरुद्ध, जरिये, निमित्र, हाथ, मारफत, सहारे आदि।
5. विरोधसूचक- प्रतिकूल, उलटे, विपरीत, खिलाफ आदि।
6. हेतुवाचक- कारण, हेतु, लिए, निमित्त, वास्ते, खातिर आदि।
7. व्यतिरेकवाचक- अतिरिक्त, अलावा, सहित, सिवाय आदि।
8. सहसूचक- साथ, संग, समेत, पूर्वक, अधीन, स्वाधीन, वश आदि।
9. पार्थक्य सूचक- दूर, पृथक, परे, हटकर, आदि।
10. तुलनावाचक- की अपेक्षा, बीनशयत, आदि।
11. संग्रहवाचक- मात्र, भर, पर्याप्त, तक आदि।
12. सदृश्यवाचक- सदृश, बराबर, ऐसा, जैसा, अनुसार, समान, तुल्य, नाई, अनुरूप, तरह आदि।
13. विनिमयवाचक- एवज, पलटे, के बदले, की जगह आदि।
14. विषयकवाचक- भरोसे, लेखे, नाम, विषय, बाबत आदि।

111. **गण –** छंद का अंग, समूह, भूत।

112. **गति –** दशा, चाल।

113. **मित्र –** साथी, सूर्य।

114. **रंग –** प्रेम, दशा, वर्ण

समोच्चरित भिन्नार्थक शब्द

हिंदी भाषा में कुछ ऐसे शब्द होते हैं, जिनका उच्चारण एक समान प्रतीत होता है, परंतु उनमें सूक्ष्म अंतर होता है और अर्थ बिल्कुल भिन्न होता है। जैसे – पुरुष, परुष इनका उच्चारण तो लगभग एक ही जैसा है, परंतु अर्थ (पुरुष – मर्द, परुष – अप्रिय) बिल्कुल भिन्न है। इसी तरह के कुछ शब्द नीचे दिए जा रहे हैं।

- अंश – भाग, हिस्सा
- अंस – कंधा
- अनल – आग
- अनिल – वायु
- अचल – पर्वत
- अचला – पृथ्वी
- अकार – 'अ' अक्षर
- आकार – रूप-रेखा
- अजात – न पैदा हुआ
- अज्ञात – न जाना हुआ
- अवधि – सीमा
- अवधी – अवध की भाषा

अध्याय – 16

शब्द शुद्धि

भाषा में शुद्ध उच्चारण के साथ शुद्ध वर्तनी का भी महत्त्व होता है। अशुद्ध वर्तनी से भाषा का सौन्दर्य तो नष्ट होता ही है, कहीं कहीं तो अर्थ का अनर्थ हो जाता है। वर्तनी अशुद्धि के कई कारण हो सकते हैं यथा-

1. स्वरागम के कारण :- निम्न शब्दों में किसी वर्ण के साथ अनावश्यक स्वर प्रयुक्त हो जाने से वर्तनी अशुद्ध हो जाती है अतः उसे हटा कर वर्तनी शुद्ध की जा सकती है।

अशुद्ध वर्तनी	=	**शुद्धवर्तनी**
अत्याधिक	=	अत्यधिक
आधीन	=	अधीन
अभ्यार्थी	=	अभ्यर्थी
अनाधिकार	=	अनधिकार
अहिल्या	=	अहल्या
दुरावस्था	=	दुरवस्था
श्मशान	=	श्मशान
गत्यावरोध	=	गत्यवरोध
प्रदर्शिनी	=	प्रदर्शनी
द्वारिका	=	द्वारका
वापिस	=	वापस
घुटुना	=	घुटना
व्यौपारी	=	व्यापारी
भागीरथ	=	भगीरथ

2. स्वरलोप के कारण : उचित स्वर के अभाव के कारण

आखरी	=	आखिरी
आप्लवित	=	आप्लावित
कुटम्ब	=	कुटुम्ब
दुगनी	=	दुगुनी
जलूस	=	जुलूस
बदाम	=	बादाम
मैंथली	=	मैथिली
विपन्नवस्था	=	विपन्नावस्था
अगामी	=	आगामी
सतरंगनी	=	सतरंगिनी

गोरव	=	गौरव
युधिष्ठर	=	युधिष्ठिर
महात्म्य	=	माहात्म्य
अश्वक्षरी	=	अश्वाक्षरी
आजीवका	=	आजीविका
फिटकरी	=	फिटकिरी
कुमुदनी	=	कुमुदिनी
विरहणी	=	विरहिणी
स्वस्थ्य	=	स्वास्थ्य
वाहनी	=	वाहिनी
वयवृद्ध	=	वयोवृद्ध
पारितोषक	=	पारितोषिक
मुकट	=	मुकुट
भगीरथी	=	भागीरथी
अजानु	=	आजानु
अष्टवक्र	=	अष्टावक्र
उन्नतशील	=	उन्नतिशील
जमाता	=	जामाता
अतिश्योक्ति	=	अतिशयोक्ति
नृत्यंगना	=	नृत्यांगना
मुकन्द	=	मुकुन्द
लोकिक	=	लौकिक

3. <u>व्यंजनागम के कारण</u> : शब्द में अनावश्यक व्यंजन के प्रयुक्त हो जाने से भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

अवन्नति	=	अवनति
प्रज्जवलित	=	प्रज्वलित
बुद्धवार	=	बुधवार
अन्तर्ध्यान	=	अन्तर्धान
सदृश्य	=	सदृश
पूज्यनीय	=	पूजनीय
निश्च्छल	=	निश्छल
श्राप	=	शाप
समुन्द्र	=	समुद्र
निद्रित	=	निन्द्रित
केन्द्रीयकरण	=	केन्द्रीकरण
कृत्तिया	=	कृतिया
शुभेच्छुक	=	शुभेच्छु
गोवर्द्धन	=	गोवर्धन
कृत्य-कृत्य	=	कृत-कृत्य
षष्ठम्	=	षष्ठ

4. <u>व्यंजन लोप के कारण</u> : किसी वर्तनी में व्यंजन के न लिखने पर वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

अध्यन	=	अध्ययन
ईर्ष्या	=	ईर्षा
उमीदवार	=	उम्मीदवार
तदन्तर	=	तदनन्तर
व्यंग	=	व्यंग्य
सामर्थ	=	सामर्थ्य
उछृंखल	=	उच्छृखल
द्वन्द	=	द्वन्द्व
उद्देश	=	उद्देश्य
उत्पन	=	उत्पन्न
महत्व	=	महत्त्व
समुनयन	=	समुन्नयन
समुचय	=	समुच्चय
मिष्टान	=	मिष्टान्न
इन्द्रा	=	इन्दिरा
उलंघन	=	उल्लंघन
उपलक्ष	=	उपलक्ष्य
चार दीवारी	=	चहार दीवारी
तरुछाया	=	तरुच्छाया
स्तनपान	=	स्तन्य पान
आर्द	=	आर्द्र
तत्वाधान	=	तत्त्वावधान
निरलम्ब	=	निरवलम्ब
श्रेयकर	=	श्रेयस्कर
राजाभिषेक	=	राज्याभिषेक
स्वालम्बन	=	स्वावलम्बन
स्वातन्त्र	=	स्वातन्त्र्य
योधा	=	योद्धा
द्विधा	=	द्विविधा

5. वर्णक्रम भंग के कारण वर्तनी में किसी वर्ण का क्रम बदलने पर अर्थात् वर्ण का क्रम आगे पीछे होने पर वर्तनी अशुद्ध हो जायेगी। यथा-

अथिति	=	अतिथि

अनुसंग	=	अनुषंग
अन्तर्चेतना	=	अन्तश्चेतना
यावत्जीवन	=	यावज्जीवन
पयोपान	=	पयःपान
उत्शिष्ट	=	उच्छिष्ट
षट्मुख	=	षण्मुख
विसाद	=	विषाद
षड़यन्त्र	=	षड्यन्त्र
रवीन्द्र	=	रविन्द्र
अन्तसाक्ष्य	=	अन्तः साक्ष्य
निरावलम्ब	=	निरवलम्ब

14. समास सम्बन्धी : सामासिक प्रक्रिया में पदों के मेल पर उनके रूप में परिवर्तन भी होता है अतः सही समास न होने से वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

मन्त्री परिषद्	=	मन्त्रिपरिषद्
नवरात्रि	=	नवरात्र
योगीराज	=	योगिराज
दुपहर	=	दोपहर
पिता-भक्ति	=	पितृ-भक्ति
अहो-रात्रि	=	अहोरात्र
माताहीन	=	मातृहीन
निशिशेष	=	निशाशेष
पक्षीराज	=	पक्षिराज
प्राणी-विज्ञान	=	प्राणि-विज्ञान
दुरात्मागण	=	दुरात्मगण
चक्रपाणी	=	चक्रपाणि
मुनीजन	=	मुनिजन
राजागण	=	राजगण

15. प्रत्यय सम्बन्धी : प्रत्यय का सही प्रयोग न होने पर।

व्यवहारिक	=	व्यावहारिक
अनुपातिक	=	आनुपातिक
प्रमाणिक	=	प्रामाणिक
इतिहासिक	=	ऐतिहासिक
सेनिक	=	सैनिक
वेदिक	=	वैदिक
पुराणिक	=	पौराणिक
भूगोलिक	=	भौगोलिक
योगिक	=	यौगिक
सौन्दर्यता	=	सौन्दर्य
माधुर्यता	=	माधुर्य
औदार्यता	=	औदार्य
कौशलता	=	कौशल
प्रधान्यता	=	प्राधान्य
बाहुल्यता	=	बाहुल्य
लावण्यता	=	लावण्य
निरपराधी	=	निरपराध
नीरोगी	=	नीरोग
निर्दयी	=	निर्दय
दरिद्री	=	दरिद्र
निर्दोषी	=	निर्दोष
निर्धनी	=	निर्धन
यौवनावस्था	=	यौवन
मान्यनीय	=	माननीय
आवश्यकीय	=	आवश्यक
एकत्रित	=	एकत्र
कृतघ्नी	=	कृतघ्न
अभिशापित	=	अभिशप्त
क्रोधित	=	क्रुद्ध
अनुवादित	=	अनूदित
लब्ध प्रतिष्ठित	=	लब्ध-प्रतिष्ठ

16. लिंग सम्बन्धी : अशुद्ध लिंग रूप भी वर्तनी सम्बन्धी अशुद्धि बन जाता है।

कवियित्री	=	कवयित्री
हथनी	=	हथिनी
सुलोचनी	=	सुलोचना
श्रीमति	=	श्रीमती
विदुषि	=	विदुषी
साम्राज्ञी	=	सम्राज्ञी
हंसनी	=	हंसिनी
चमारन	=	चमारिन
ठाकुराइन	=	ठकुराइन
प्रियदर्शनी	=	प्रियदर्शिनी
गृहणी	=	गृहिणी
कमलनी	=	कमलिनी
सरोजनी	=	सरोजिनी

बुद्धिमति	=	बुद्धिमती
कामनी	=	कामिनी
कर्ती	=	कर्त्री
कृशांगिनी	=	कृशांगी
तपस्वनी	=	तपस्विनी

17. वचन सम्बन्धी : बहुवचन बनाने के नियमों की उपेक्षा करने पर भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

दवाईयाँ	=	दवाइयाँ
इकाईयाँ	=	इकाइयाँ
परीक्षार्थीयों	=	परीक्षार्थियो
हिन्दूओं	=	हिन्दुओं
संन्यासी वर्ग	=	संन्यासिवर्ग
खेतीहर	=	खेतिहर
प्राणीवृन्द	=	प्राणिवृन्द
विद्यार्थीगण	=	विद्यार्थिगण

18. विसर्ग सम्बन्धी : वर्तनी में सही विसर्ग का प्रयोग न करने या विसर्ग संधि की अशुद्धि पर वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

प्रातकाल	=	प्रातः काल
अधोपतन	=	अधः पतन
दुख	=	दुःख
निकंटक	=	निष्कंटक/निःकंटक
प्राय	=	प्रायः
निश्वास	=	निःश्वास
अन्तकरण	=	अन्तः करण
निसन्देह	=	निःसन्देह / निस्सन्देह
अतः एव	=	अतएव

19. हलन्त का प्रयोग न करने पर।

परिषद	=	परिषद्
उच्छवास	=	उच्छ्वास
षडयन्त्र	=	षड्यन्त्र
उदघाटन	=	उद्घाटन
षटरस	=	षट् रस
उदगार	=	उद्गार
गदगद	=	गद्गद्
विद्युत्	=	विद्युत
तड़ित	=	तड़ित्
पृथक	=	पृथक्
भाषाविद	=	भाषाविद्

20. उपसर्ग सम्बन्धी : सही उपसर्ग का प्रयोग न होने या अनावश्यक उपसर्ग लगा देने से भी वर्तनी अशुद्ध हो जाती है।

उदण्ड	=	उद्दण्ड
बेफजूल	=	फजूल
दरअसल में	=	दरअसल
सविनयपूर्वक	=	सविनय

21. मात्रा सम्बन्धी : स्वर की उचित मात्रा के प्रयोग न करने से सर्वाधिक वर्तनी सम्बन्ध अशुद्धियाँ होती हैं।

रात्री	=	रात्रि
मूर्ती	=	मूर्ति
हानी	=	हानि
तिलांजली	=	तिलांजलि
वाल्मीकी	=	वाल्मीकि
ईकाई	=	इकाई
बिमार	=	बीमार
परिक्षा	=	परीक्षा
पत्नी	=	पत्नी
पती	=	पति
निरोग	=	नीरोग
निरिक्षण	=	निरीक्षण
रचियता	=	रचयिता
महिना	=	महीना
दिवार	=	दीवार
पिपिलिका	=	पिपीलिका
इप्सित	=	ईप्सित
गुरू	=	गुरु
शत्रू	=	शत्रु
अश्रू	=	अश्रु
मूमूर्ष	=	मुमूर्ष
सामुहिक	=	सामूहिक
सुक्ष्म	=	सूक्ष्म
जाउँगा	=	जाऊँगा
मुहुर्त	=	मुहूर्त्त
कुतुहल	=	कुतूहल

अध्याय – 2।

मुहावरे तथा लोकोक्तियाँ

मुहावरा :- मुहावरा बात कहने की एक शैली है। यह अरबी भाषा के 'मुहावर' शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ है- अभ्यास करना या बातचीत "लक्षणा व व्यंजना द्वारा वह शुद्ध वाक्य जो किसी बोली जाने वाली भाषा में प्रचलित होकर रुढ़ हो गया हो तथा प्रत्यक्ष अर्थ के बजाए सांकेतिक अर्थ देता हो।"

"मुहावरा" कहलाता है, जैसे खिचड़ी पकाना, लाठी खाना, नाम धरना आदि।

लोकोक्तियाँ / कहावतें

लोकोक्ति का अर्थ है 'लोक समाज में कही जाने वाली उक्तियाँ तथा कहावत का अर्थ हैं 'कही जाने वाली बात।'

ऐसा वाक्य जो चमत्कृत ढंग से संक्षेप में, किसी सत्य या नीति का आशय, सशक्त रूप से व्यक्त करे तथा अधिक समय तक प्रयोग में आकर जनजीवन में प्रचलित हो गया हो लोकोक्ति/ कहावत कहलाती है।

लोकोक्तियों / कहावतों की निम्न विशेषताए होती हैं :

1. लोकोक्तियाँ / कहावतें प्रत्यक्ष अर्थ नहीं बल्कि सांकेतिक अर्थ देते हैं।
2. लोकोक्तियाँ / कहावतों में जीवन के गहरे तथा मूल्यावान अनुभव छिपे रहते हैं, इसलिये इन्हें ज्ञान की पितरियाँ कहा जाता है।
3. लोकोक्तियाँ / कहावतें एक व्यक्ति से सम्बन्धित न होकर 'जन साधारण की धरोहरें' होती हैं।

अपना उल्लू सीधा करना	=	स्वार्थ सिद्ध करना
अपनी खिचड़ी अलग पकाना	=	सबसे अलग रहना
अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना	=	अपनी प्रशंसा स्वयं करना
अपने पाँव पर कुल्हाड़ी मारना	=	स्वयं को हाँनि पहुँचाना
अपने पैरों पर खड़े होना	=	आत्मनिर्भर होना
अक्ल पर पत्थर पड़ना	=	बुद्धि भ्रष्ट होना
अक्ल के पीछे लट्ठ लेकर फिरना	=	मूर्खता प्रदर्शित करना
अंगूठा दिखाना	=	कोई वस्तु देने या काम करने से इंकार करना
अँधे की लकड़ी होना	=	एक मात्र सहारा
अच्छे दिन आना	=	भाग्य खुलना
अंग-अंग फूले न समाना	=	बहुत खुशी होना
अंगारों पर पैर रखना	=	साहसपूर्ण खतरे में उतरना
आँख का तारा होना	=	बहुत प्यारा
आँखें बिछाना	=	अत्यन्त प्रेम पूर्वक स्वागत करना
आँखें खुलना	=	वास्तविकता का बोध होना
आँखों से गिरना	=	आदर कम होना
आँखों में धूल झोंकना	=	धोखा देना
आँख दिखाना	=	क्रोध करना/डराना
आटे दाल का भाव मालूम होना	=	बड़ी कठिनाई में पड़ना
आग बबूला होना	=	बहुत गुस्सा होना
आग से खेलना	=	जानबूझ कर मुसीबत मोल-लेना

आग में घी डालना	=	क्रोध भड़काना
आँच न आने देना	=	हानि या कष्ट न होने देना
आड़े हाथों लेना	=	खरी-खरी सुनाना
आनाकानी करना	=	टालमटोल करना
आँचल पसारना	=	याचना करना
आस्तीन का साँप होना	=	कपटी मित्र
आकाश के तारे तोड़ना	=	असंभव कार्य करना
आसमान से बातें करना	=	बहुत ऊँचा होना
आकाश सिर पर उठाना	=	बहुत शोर करना
आकाश पाताल एक करना	=	कठिन प्रयत्न करना
आँख का काँटा होना	=	बुरा लगना
आँसू पीकर रह जाना	=	भीतर ही भीतर दुखी होना
आठ-आठ आँसू गिराना	=	पश्चाताप करना
इधर-उधर की हाँकना	=	बेमतलब की बातें करना
इतिश्री होना	=	समाप्त होना
इस हाथ लेना उस हाथ देना	=	हिसाब-किताब साफ करना
ईद का चाँद होना	=	बहुत दिनों बाद दिखाई देना
ईंट से ईंट बजाना	=	नष्ट कर देना

ईंट का जवाब पत्थर से देना	=	कड़ाई से पेश आना
आँसू पोंछना	=	सान्त्वना देना
आँखें तरेरना	=	क्रोध से देखना
आकाश टूट पड़ना	=	अचानक विपत्ति आना
आग लगने पर कुआँ खोदना	=	ऐन मौके पर उपाय करना
उंगली उठाना	=	निन्दा करना/लॉछन लगाना
उन्नीस-बीस का फर्क होना	=	मामूली फर्क होना
उल्टी गंगा बहाना	=	प्रचलन के विपरीत कार्य करना
उड़ती चिड़िया पहचानना	=	बहुत अनुभवी होना
उल्लू बनाना	=	मूर्ख बनाना
उँगली पर नचाना	=	वश में करना
उल्लू सीधा करना	=	अपना स्वार्थ देखना
एक और एक ग्यारह होना	=	एकता में शक्ति होना
एक लाठी से हाँकना	=	सबसे एक जैसा व्यवहार करना
एक आँख से देखना	=	समदृष्टि होना/भेदभाव न करना
एडी चोटी का जोर लगाना	=	बहुत कोशिश करना
एक ही थाली के चट्टे-बट्टे होना	=	एक प्रवृत्ति के होना
ओखली में सिर देना	=	जानबूझ कर विपत्ति में फँसना
ओढ़ लेना	=	जिम्मेदारी लेना

कब्र में पाँव लटकना	=	मौत के करीब होना
कलम तोड़ना	=	अत्यधिक मर्मस्पर्शी रचना करना।
कलेजा छलनी करना	=	ताने मारना/व्यंग्य करना
कलेजा थामकर रह जाना	=	असह्य बात सहन कर रह जाना
कलेजे का टुकड़ा होना	=	अत्यन्त प्रिय/आत्मिक होना
कागज की नाव होना	=	क्षण-भंगुर
कागजी घोड़े दौड़ाना	=	केवल कागजी कार्यवाही करना
कानों कान खबर न होना	=	किसी को पता न चलना
कुत्ते की मौत मरना	=	बुरी दशा में प्राणान्त होना
कमर टूटना	=	सहारा न रहना
कान भरना	=	किसी के विरुद्ध शिकायत करते रहना
सी का घर जलाकर अपना हाथ	=	छोटे से स्वार्थ के लिए दूसरों को हानि पहुँचाना
	=	
कटे पर नमक छिड़कना	=	दुःखी को और अधिक दुःखी करना
गुदड़ी का लाल होना	=	छुपारुस्तम/गरीब किन्तु गुणवान
गड़े मुर्दे उखाड़ना	=	बीती बातें छेड़ना
गले पड़ना	=	जबरन आश्रय लेना
गंगा नहाना	=	दायित्व से मुक्ति पाना

गिरगिट की तरह रंग बदलना	=	अवसरवादी होना/निश्चय बदलना
गुड़ गोबर होना	=	काम बिगड़ना
गुड़ गोबर करना	=	काम बिगाड़ना। किया कराया नष्ट करना
गुलछर्रे उड़ाना	=	मौज उड़ाना
गाल बजाना	=	अपनी प्रशंसा करना
गागर में सागर भरना	=	थोड़े में बहुत कुछ कह देना
गाँठ में कुछ न होना	=	पैसा पास न होना
गला काटना	=	लोभ में पड़कर हाँनि पहुँचाना
गर्दन पर छुरी फेरना	=	अत्याचार करना
घाट-घाट का पानी पीना	=	स्थान-स्थान का अनुभव होना
घाव पर नमक छिड़कना	=	दुःखी को और दुःखी करना
घड़ों पानी पड़ना	=	बहुत लज्जित होना
घी के दीये जलाना	=	बहुत खुश होना/खुशियाँ मनाना
घर फूंक कर तमाशा देखना	=	अपना लुटाकर भी मौज करना/ अपने नुकसान पर प्रसन्न होना
घर सिर पर उठाना	=	बहुत शोर करना
घोड़े बेचकर सोना	=	निश्चिंत होना
घुटने टेक देना	=	हार मान लेना
चादर के बाहर पैर पसारना	=	आय से अधिक व्यय करना
चुंगल में फँसना	=	किसी के काबू में होना

चोली दामन का साथ होना	=	घनिष्ठ सम्बन्ध होना
चेहरे पर हवाइयाँ उड़ना	=	घबरा जाना
चिकनी चुपड़ी बातें करना	=	चापलूसी करना/कपट व धोखा
चुल्लूभर पानी में डूब मरना	=	बहुत शर्मिन्दा होना
चिकना घड़ा होना	=	अत्यन्त बेशर्म
चूड़ियाँ पहनना	=	कायरता दिखाना
चकमा देना	=	धोखा देना
चौपट करना	=	पूर्णरूप से नष्ट करना
चारों खाने चित्त होना	=	बुरी तरह हारना
चैन की बंशी बजाना	=	आराम से रहना
चूना लगाना	=	धोखा देकर ठगना
चार चाँद लगाना	=	शोभा बढ़ाना
चम्पत होना	=	गायब होना
छठी का दूध याद आना	=	बड़ी मुसीबत में फँसना
छाती ठोकना	=	उत्साहित होना
छप्पर फाड़कर देना	=	बिना परिश्रम देना
ती पर मूंग दलना	=	बहुत परेशान करना
छोटे मुँह बड़ी बात करना	=	अपनी हैसियत से ज्यादा बात करना
छाती पर साँप लोटना	=	अत्यन्त ईर्ष्या करना
छक्के छुड़ाना	=	पैर उखाड़ देना/बेहाल करना

छाती पर पत्थर रखना	=	हृदय कठोर करना
जले पर नमक छिड़कना	=	दुःखी का दुःख बढ़ाना
जान हथेली पर रखना	=	मरने की परवाह न करना
जमीन पर पैर न पड़ना	=	बहुत गर्व करना
जान में जान आना	=	धीरज बँधना/मुसीबत से छुटकारा पाना
जबानी जमा खर्च करना	=	गप्पें लड़ाना
जबान पर लगाम लगाना	=	बहुत कम बोलना
जहर का चूंट पीना	=	कड़वी बात सुनकर सहन कर लेना
जीती मक्खी निगलना	=	जानबूझ कर बेईमानी करना
जान पर खेलना	=	साहसपूर्ण कार्य करना
जूता चाटना	=	चापलूसी करना
जहर उगलना	=	कड़वी बात कहना
झख मारना	=	समय नष्ट करना
झगड़ा मोल लेना	=	विवाद में जानबूझ कर पड़ना
जी तोड़ कर काम करना	=	बहुत मेहनत करना
जी भर आना	=	दया उमड़ना / चित्त में दुःख होना
टोपी उछालना	=	अपमानित करना
टेढ़ी-खीर होना	=	कठिन काम
टका सा जवाब देना	=	साफ इंकार करना
टेक निभाना	=	वचन पूरा करना

मन मसोस कर रह जाना	=	इच्छा को रोकना
मुँह काला करना	=	कलंकित होना
मुँह की खाना	=	बातों में हारना/अपमानित होना
मुँह तोड़ जवाब देना	=	कठोर शब्दों में कहना
मन मारना	=	उदास होना/इच्छाओं पर नियंत्रण

लोकोक्तियाँ एवं कहावतें

अपना रख, पराया चख	-	अपना बचाकर दूसरों का माल हड़प करना
अपनी करनी पार उतरनी	-	स्वयं का परिश्रम ही काम आता है।
अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता	-	अकेला व्यक्ति शक्ति हीन होता है।
अधजल गगरी छलकत जाए	-	ओछा आदमी अधिक इतराता है।
अंधों में काना राजा	-	मूर्खों में कम ज्ञान वाला भी आदर पाता है।
अंधे के हाथ बटेर लगना	-	अयोग्य व्यक्ति को बिना परिश्रम संयोग से अच्छी वस्तु मिलना
अंधा पीसे कुत्ता खाय	-	मूर्खों की मेहनत का लाभ अन्य उठाते हैं असावधानी से अयोग्य को लाभ
अब पछताये होत क्या, जब चिड़िया	-	अवसर निकल जाने पर पछताने से कोई लाभ चुग गई खेत नहीं
अन्धे के आगे रोवै अपने नैना खावै	-	निर्दय व्यक्ति या अयोग्य व्यक्ति से सहानुभूति की पेक्षा करना व्यर्थ है
अपनी गली में कुत्ता भी शेर होता है	-	अपने क्षेत्र में कमजोर भी बलवान बन जाता है।
अन्धेर नगरी चौपट राजा	-	शासन की अयोग्यता से सर्वत्र अराजकता आ ना।
अन्धा क्या चाहे दो आँखें	-	बिना प्रयास वांछित वस्तु का मिल जाना।
अक्ल बड़ी या भैंस	-	शारीरिक बल से बुद्धिबल श्रेष्ठ होता है।
अपना हाथ जगन्नाथ	-	अपना काम अपने ही हाथों ठीक रहता है।
अपनी-अपनी ड़पली अपना-अपना राग	-	तालमेल का अभाव/ सबका अलग-अलग मत ना/एकमत क अभाव
अंधा बाँटे रेवडी फिर-फिर अपनों को देय	-	स्वार्थी व्यक्ति अधिकार पाकर अपने लोगों की सहायता करता है।
अंत भला तो सब भला	-	कार्य का अन्तिम चरण ही महत्त्वपूर्ण होता है।
आ बैल मुझे मार	-	जानबूझ कर मुसीबत में फंसना
आम के आम गुठली के दाम	-	हर प्रकार का लाभ/एक काम से दो लाभ
आँख का अंधा नाम नयन सुख:	-	गुणों के विपरीत नाम होना।
आगे कुआँ पीछे खाई	-	दोनों/सब ओर से विपत्ति में फँसना
आप भला जग भला	-	अपने अच्छे व्यवहार से सब जगह आदर मिलताहै।
आये थे हरि भजन को ओटन लगे	-	उद्देश्य से भटक जाना/श्रेष्ठ काम करने क पासकी बजाए तुच्छ कार्य करना / कार्य विशेषकी उपेक्षा कर किसी अन्य कार्य में लग जाना।
आधा तीतर आधा बटेर	-	अनमेल मिश्रण/बेमेल चीजें जिनमें सामंजस्य का अभाव हो।
इन तिलों में तेल नहीं	-	किसी लाभ की आशा न होना

आठ कनौजिए नौ चूल्हे	-	फूट होना
आँख का अंधा गाँठ का पूरा	-	मूर्ख किंतु संपन्न ।
आँख का अंधा नाम नयनसुख	-	गुणों के विपरीत नाम ।
आगे नाथ न पीछे पगहा	-	पूर्णतः अनियंत्रित ।
आधी छोड़ एक को ध्यावे, आधी मिले न सारी जावे	-	लोभ में सहज रूप से उपलब्ध वस्तु को भी त्यागना पड़ सकता है ।
इमली के पात पर दंड पेलना	-	सीमित साधनों से बड़ा कार्य करने का प्रयास करना ।
उल्टा चोर कोतवाल को डाँटे	-	अपना अपराध न मानना औरपूछने वाले को ही दोषी ठहराना।
उल्टे बाँस बरेली को	-	विपरीत कार्य या आचरण करना
ऊधो का न लेना, न माधो का देना	-	किसी से कोई मतलब न रखना / बसे अलग।
ऊँची दुकान फीका पकवान	-	वास्तविकता से अधिक दिखावा । दिखावा ही दिखावा। केवल बाहरी दिखावा।
ऊँट के मुँह में जीरा	-	आवश्यकता की नगण्य पूर्ति
ऊखली में सिर दिया तो मूसल	-	जब दृढ़ निश्चय कर लिया तो का क्या ड़रबाधाओं से क्या घबराना
ऊँट किस करवट बैठता है	-	परिणाम में अनिश्चितता होना।
उतर गई लोई तो क्या करेगा कोई -	-	बेशर्म आदमी पर कोई प्रभाव नहीं डाल सकता ।
उल्टे बाँस बरेली को	-	जहाँ जो चीज उपलब्ध हो पैदा होती हो, उल्टे वहीं पर वह वस्तु पहुँचाना ।
ऊँट किस करवट बैठता है	-	ऐसी घटना की प्रतीक्षा जिसका अनुमान लगाना असंभव है ।
एक पंथ दो काज	-	एक काम से दोहरा लाभ/एक तरकीब से दो कार्य करना/एक साधन से दो कार्य करना।
एक साधे सब सधे	-	एक-एक करके कार्य करने पर क्रमशः सब कार्य ठीक होना ।
एक अनार सौ बीमार	-	वस्तु कम, चाहने वाले अधिक/ एक स्थान के लिये सैंकड़ों प्रत्याशी
एक मछली सारा तालाब गंदा	-	एक की बुराई से साथी भी बदनाम कर देहैं/होहैं।
एक म्यान में दो तलवारें नहीं	-	दो प्रशासक एक ही जगह एक समा सकतीसाथ शासन नहीं कर सकते।
एक हाथ से ताली नहीं बजती	-	लड़ाई का कारण दोनों पक्ष होते हैं।
एक तो करेला दूजे नीम चढ़ा	-	बुरे से और अधिक बुरा होना/ एक बुराई के साथ दूसरी बुराई का जुड़ जाना।
ओस चाटे प्यास नहीं बुझती	-	अल्प मात्रा में प्राप्ति से बड़ी आवश्यकता पूरी नहीं होती ।
कागज की नाव नहीं चलती	-	बेइमानी से किसी कार्य में सफलता नहीं मिलती।
कागहि कहा कपूर चुगाए, स्वान न्हवाए गंग	-	दुर्जन की प्रकृति खूब प्रयत्न करने पर भी नहीं बदलती ।
काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती	-	झूठ बार-बार नहीं चलता ।
कै हंसा मोती चुगैं, कै भूखा रह जाय	-	प्रतिष्ठित व्यक्ति अपनी मर्यादा में रहता है ।

हंसा था सो उड़ गया , कागा भया दीवान	-	भले लोगों के स्थान पर बुरे लोगों के हाथ में सत्ता अधिकार आना ।
हथेली पर सरसों नहीं उगना	-	प्रत्येक कार्य बिना एक प्रक्रिया और समय के पूर्ण नहीं होता ।
हाथ कंगन को आरसी क्या ?		प्रत्यक्ष को प्रमाण की आवश्यकता नहीं ।
हाथी के दांत दिखाने के और , खाने के और		कथनी और करनी में अंतर

अध्याय – 22

पारिभाषिक : प्रशासनिक शब्दावली

राजकीय प्रशासन एवं अन्यत्र भी हिंदी एवं अंग्रेज़ी दोनों भाषाओं का चलन है इसलिए अंग्रेजी एवं हिंदी दोनों भाषाओं की आधारभूत पारिभाषिक शब्दावली से परिचित होना आवश्यक है। यहाँ भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा प्रकाशित विविध शब्दावलियों से मुख्य-मुख्य शब्दावली दी जा रही है। यह शब्दावली ही

अधिकृत है, अतः शब्दों के इसी हिंदी अनुवाद को प्रयोग में लेना चाहिए। अधिक जानकारी के लिए बृहत् प्रशासन शब्दावली आदि अन्य शब्दावलियों को देखा जा सकता है।

(A)

Abandonment	-	परित्याग
Abatement	-	उपशमन/कमी
Abbreviation	-	संक्षेप/संक्षेपण
Abeyance	-	आस्थगन
Ability	-	योग्यता
Abnormal	-	अपसामान्य
Abolition	-	उन्मूलन/समाप्ति
Above cited	-	उपर्युक्त
Above par	-	औसत से ऊँचा
Abridge	-	संक्षेप करना
Absence	-	अनुपस्थिति
Absentee Statement	-	अनुपस्थिति विवरण
Abstract	-	सार
Abuse	-	दुरुपयोग
Academic	-	शैक्षणिक
Academic Council	-	शैक्षणिक परिषद्

Academic Council	-	शैक्षणिक परिषद्
Academy	-	अकादमी
Accede	-	मान लेना/ सम्मिलित होना
Acceptability	-	स्वीकार्यता
Acceptance	-	स्वीकृति
Accessory	-	उपसाधन/अतिरिक्त
Accident	-	दुर्घटना/संयोग
Accord	-	समझौता, देना/अनुकूल होना नई
Accordingly	-	तदनुसार
Account	-	लेखा/खाता/हिसाब
Account Head	-	लेखा शीर्ष मई
Accountibility	-	उत्तरदायित्व/जवाव देही
Accrue	-	प्रोद्भूत होना
Accuracy	-	यथार्थता/शुद्धता
Accusation	-	अभियोग
Accuse	-	अभियोग लगाना
Acknowledge	-	अभिस्वीकार करना/मानना
Acknowledgement	-	पावती / प्राप्ति सूचना / अभिस्वीकृति / रसीदी
Acquire	-	अवाप्त करना/अर्जन करना
Acquisition of land	-	भूमि अवाप्ति
Act in force	-	प्रवृत्त अधिनियम
Acting	-	कार्यवाहक/कार्यकारी
Action	-	कार्यवाही
Activities	-	कार्यकलाप
Additional	-	अतिरिक्त
Addressee	-	पाने वाला/प्रेष्य
Ad hoc	-	तदर्थ
Adjourn	-	स्थगित करना/काम रोकना
Adjourned-Sinedic	-	अनिश्चित काल के लिए स्थगित
Adjournment motion	-	स्थगन प्रस्ताव
Adjustment	-	समायोजन
Administer	-	प्रशासन करना / देना / दिलाना
Administer oath	-	शपथ दिलाना
Administration	-	प्रशासन
Administration of Approval	-	प्रशासनिक अनुमोदन
Administration of Control	-	प्रशासनिक नियंत्रण
Administration of Convenience	-	प्रशासनिक सुविधा
Administration of Reforms	-	प्रशासनिक सुधार
Administration of Set up	-	प्रशासनिक व्यवस्था
Administration of System	-	प्रशासनिक पद्धति
Admissible	-	माहय, स्वीकार
Admit	-	स्वीकार करना/अंदर आने देना प्रविष्ट करना
Agrarian	-	कृषि भूमि संबंधी
Amount	-	राशि/मात्रा/ परिमाण

प्रिय दोस्तों, अब तक हमारे नोट्स में से अन्य परीक्षाओं में आये हुए प्रश्नों के परिणाम देखने के लिए क्लिक करें -

RAS PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=p3_i-3qfDy8&t=1253s

Rajasthan CET Gradu. Level - https://youtu.be/gPqDNlc6UR0

Rajasthan CET 12th Level - https://youtu.be/oCa-CoTFu4A

RPSC EO / RO - https://youtu.be/b9PKjl4nSxE

VDO PRE. - https://www.youtube.com/watch?v=gXdAk856W18&t=202s

Patwari - https://www.youtube.com/watch?v=X6mKGdtXyu4&t=2s

PTI 3rd grade - https://www.youtube.com/watch?v=iA_MemKKgEk&t=5s

SSC GD – 2021 - https://youtu.be/2gzzfJyt6vI

EXAM (परीक्षा)	DATE	हमारे नोट्स में से आये हुए प्रश्नों की संख्या
RAS PRE. 2021	27 अक्तूबर	74 प्रश्न आये
SSC GD 2021	16 नवम्बर	68 (100 में से)
SSC GD 2021	08 दिसम्बर	67 (100 में से)
RPSC EO/RO	14 मई (Ist Shift)	95 (120 में से)
राजस्थान S.I. 2021	14 सितम्बर	119 (200 में से)
राजस्थान S.I. 2021	15 सितम्बर	126 (200 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (Ist शिफ्ट)	79 (150 में से)

RAJASTHAN PATWARI 2021	23 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	103 (150 में से)
RAJASTHAN PATWARI 2021	24 अक्तूबर (2nd शिफ्ट)	91 (150 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (1st शिफ्ट)	59 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	27 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	61 (100 में से)
RAJASTHAN VDO 2021	28 दिसंबर (2nd शिफ्ट)	57 (100 में से)
U.P. SI 2021	14 नवम्बर 2021 1st शिफ्ट	91 (160 में से)
U.P. SI 2021	21नवम्बर2021 (1st शिफ्ट)	89 (160 में से)
Raj. CET Graduation level	07 January 2023 (1st शिफ्ट)	96 (150 में से)
Raj. CET 12th level	04 February 2023 (1st शिफ्ट)	98 (150 में से)

& Many More Exams like UPSC, SSC, Bank Etc.

नोट्स खरीदने के लिए इन लिंक पर क्लिक करें

Whatsapp - https://wa.link/2iclos

Online order - https://bit.ly/asi-woman

Call करें - 9887809083